

श्री राम वंजी सुतार

Shri Ram Vanji Sutar



पद्म भूषण

Padma Bhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्री राम वंजी सुतार

भारत तथा विश्व में स्मारकीय मूर्तिकला के सृजन की एक अग्रणी फर्म मैसर्स राम सुतार फाइन आर्टस प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक एवं संस्थापक श्री राम वंजी सुतार कला जगत की एक सुप्रसिद्ध विभूति हैं।

2. आपका जन्म महाराष्ट्र के धुले जिले के एक छोटे से गांव गोंडूर में दिनांक 19 फरवरी, 1925 को हुआ था। आपने सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई से मूर्तिकला में डिप्लोमा किया। आपकी अंतर्जात प्रतिभा विकसित हुई और आप अपनी कक्षा में सदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए तथा पाठ्यक्रम के अंत में आपको मॉडलिंग के लिए प्रतिष्ठित मेयो गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ। आप 90 वर्ष की अवस्था में भी महान मूर्तिकार के रूप में कांस्य की स्मारकीय मूर्तिकला के सृजन के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

3. सजीव मूर्तिकला में आपकी उत्कृष्ट प्रवीणता और विशिष्ट योग्यता है तथा स्मारकीय मूर्तियों के निर्माण में आपको महारत हासिल है। आपकी पहली सफलता वर्ष 1961 में गांधी सागर बांध पर निर्मित 45 फुट ऊंचे चम्बल स्मारक के रूप में परिलक्षित हुई। कंक्रीट के एक ब्लॉक से सृजित इस विशालकाय सुंदर कृति में मां चंबल को अपने दो बच्चों मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के साथ दर्शाया गया है जो दोनों राज्यों के भातृभाव की सूचक हैं। उनके द्वारा बनाई गई महात्मा गांधी की मूर्ति विश्व भर के 300 से भी अधिक शहरों में लगाई गईं हैं। उनके द्वारा सृजित 16 प्रमुख मूर्तियों को संसद में स्थापित किया गया है। उन्होंने कुरूक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर पर 40 फीट ऊंचे, कृष्ण अर्जुन रथ, गांधी मैदान, पटना में महात्मा गांधी की मूर्ति, कर्नाटक विधानसभा में 27 फीट ऊंची महात्मा गांधी की मूर्ति सहित कई स्मारकीय मूर्तियों का सृजन किया है। आप विश्व के सबसे ऊंची मूर्ति 522 फीट ऊंचे "स्टैचू ऑफ यूनिटी" के सृजनकर्ता है।

4. सूरजकुंड–बडखल झील मार्ग पर स्थित "आनंदवन" में सुतार कला वाटिका नामक वृहद् मूर्ति पार्क में आपकी कृतियों की विशाल सफेद फाइबर ग्लास से बनी नकल आम जनता के लिए प्रदर्शित की गई थी जो भारत में एक नई अवधारणा है तथा इसकी संकल्पना उनके प्रतिभावान वास्तुकार पुत्र श्री अनिल सुतार ने की तथा इसके भू–दृश्य का निर्माण किया है।

5. आपको कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया है जिसमें आपकी अदभुत उपलब्धियों के लिए प्रदत्त पदम श्री (1989) पुरस्कार भी शामिल है।

Shri Ram Vanji Sutar

Shri Ram Vanji Sutar, Director and founder of M/s Ram Sutar Fine Arts Private Limited, a leading firm creating monumental sculpture in India and the world, is widely recognized across in the world of Art.

2. Born on February 19, 1925 in a Small village Gondur, District Dhule of Maharshtra, Shri Sutar received his Diploma in Sculpture from Sir J. J. School of Art in Bombay. The inborn talent flourished, and he was always first class first, bagging at the end of his course, the prestigious Mayo Gold medal for modelling. This great sculptor now in his nineties is still actively working on monumental sculpture in bronze.

3 Shri Sutar's forte is the excellent mastery in realistic portraiture and he enjoys over the proportion and detail in the execution of monumental works. His fist triumph was the 45 feet high Chambal monument at Gandhi Sagar Dam Made in 1961. A gigantic beauty carved out of a single block of concrete, depicts mother Chambal with her two children- Madhya Pradesh and Rajasthan symbolizing the brotherhood of the two states. Mahatma Gandhi statues made by him have been installed in more than 300 cities all over the world. Sixteen major sculptures are installed in the Parliament. He has made many monumental statues including the Krishna Arjun Rath at Brahm Sarovar, Kurukshetra, 40 feet high Mahatma Gandhi statue at Gandhi Maidan, Patna and 27 feet high Mahatma Gandhi at Karnataka Vidhana Saudha. He is also the sculptor for 522 feet high "Statue of Unity" the world's tallest statue.

4. Gigantic white fibreglass replicas of Shri Ram Sutar's creations are displayed for general public in a sprawling Sculpture Garden, called Sutar Kala Vatika in "Anandvan" a unique concept in India, located on the Surajkund-Bhadkhal Lake road, which was conceived and landscaped by his gifted architect son Shri Anil Sutar.

5. Shri Sutar has been bestowed with many awards and honours including the Padma Shri (1989) in recognition of his phenomenal achievements.